**नोट -**

1. नवीन छात्रों की उच्चारण शुद्धि हेतु अमरकोष पढ़ाएँ (समयानुसार)।
2. वेदमन्त्रों की अक्षुण्ण परम्परा को बनाए रखने हेतु प्रत्येक छात्र का उच्चारण एवं स्वर शुद्ध हो इसका विशेष ध्यान रखते हुए छात्रों को उच्चारण स्थान इत्यादि से परिचित कराये।
3. नवीन छात्रों से उनका गोत्र, शाखा इत्यादि ज्ञात कर उसको स्वशाखाध्ययन कराने का प्रयत्न करें।
4. प्रत्येक वर्ष के पाठ्यक्रम का गुरुमुख से सम्पूर्ण अध्यापन एवं स्वाध्याय पूर्वक कण्ठस्थीकरण उसी वर्ष में पूर्ण करना अनिवार्य है।
5. छात्रों को परम्परागत सस्वर अध्ययन पद्धति से ही वेद अध्यापन कराना अनिवार्य है। जैसे -

   16 सन्था पद्धति

   अथवा

   10 पाठ

   10 वल्लि/दशावृत्ति/सन्था
6. प्रत्येक माह के अन्त में (पढाये गए विषयों की) मासिक परीक्षा कर छात्रों के कण्ठस्थीकरण, उच्चारण आदि की स्थिति का अवलोकन करें। यदि न्यूनता हो तो पूर्ण करें।
7. छात्रों की उच्चारण शुद्धि एवं ज्ञानवर्धन के लिए प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या के पश्चात् विष्णुसहस्त्रनाम, महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्, दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्, अन्नपूर्णास्तोत्रम्, भजगोविन्दम्, प्रज्ञाविवर्धनस्तोत्रम्, रामरक्षास्तोत्रम् इत्यादि स्तोत्रों का समयानुसार अभ्यास एवं पाठ करें, जिससे भारतीय परम्परा में श्रद्धा एवं उत्साह बना रहें।
8. गतवर्षों का पाठ्यक्रम छात्र को कण्ठस्थ है या नहीं ज्ञात करने हेतु परीक्षण (Assessment) किया जाएगा।
9. परीक्षक को विगत सभी वर्षों के पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछने का पूर्ण अधिकार होगा।
10. सस्वर वेदाध्ययन करने वालों की संख्या शनैः शनैः क्षीण हो रही है। अतः श्रद्धावान्, मेधावान् एवं दार्ढ्य बुद्धि वाले छात्रों की वेदाध्ययन में रुचि उत्पन्न करने हेतु आवश्यक प्रयत्न करना।

# महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

## (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

## अथर्ववेद पैप्पलाद शाखा पाठ्यक्रम

| वेदविभूषण प्रथमवर्ष (उत्तरमध्यमा प्रथमवर्ष / कक्षा XI समकक्ष) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सप्तदश काण्ड, कंडिका 55, अनुवाक 8, मन्त्र संख्या 474<br>अष्टादश काण्ड, कंडिका 82, अनुवाक 12, मन्त्र संख्या 715 | | | | | |
| **क्रमांक** | **माह / पक्ष** | **पाठ्यक्रम बिन्दु** | **मन्त्र संख्या** | **अंक** | **अध्ययन-अध्यापन** |
| 1 | प्रथम | सत्यं बृहदृतमुग्रं से या धान्यात् पर्यन्त<br>सप्तदश काण्ड 1 से 2 अनुवाक, 1 से 13 कंडिका | 137 | 9 | प्रथम मास द्वितीया से प्रारम्भ होकर सप्तमी पर्यन्त गुरु छात्र को पढायेंगे।<br>गुरु दो बार मन्त्रार्ध को उच्चारण करेंगे छात्र चार बार पढेंगे।<br>नवमी से छात्रों को गुरु त्रयोदशी पर्यन्त स्वयं बैठकर सन्था करायेंगे।<br>तृतीय सप्ताह में छात्र कण्ठस्थ करेंगे और चतुर्थ सप्ताह में गुरु को कण्ठस्थ सुनायेंगे।<br>चतुर्थ सप्ताह से पूर्वपाठ की आवृत्ति चलेगी तत् पश्चात् नूतन पाठ पढाया जाएगा। |
| 2 | द्वितीय | दुःशङ्काशे भीम से इन्द्रो वज्र मसिंचत पर्यन्त<br>सप्तदश काण्ड 3 से 4 अनुवाक, 14 से 27 कंडिका | 137 | 9 | |
| 3 | तृतीय | तमादत्त तमुदैङ्गयत से इन्द्रोवलेनासि पर्यन्त<br>सप्तदश काण्ड 5 से 6 अनुवाक, 28 से 43 कंडिका | 137 | 9 | |
| 4 | चतुर्थ | न डमारोह से एषा त्वचां पुरुषे पर्यन्त<br>सप्तदश काण्ड 7 से 8 अनुवाक, 44 से 55 कंडिका | 137 | 9 | |
| 5 | पञ्चम | सत्येनोत्तभिता से अमोऽहमस्मि<br>अष्टादश काण्ड 1 से 2 अनुवाक, 1 से 14 कंडिका | 137 | 9 | |
| 6 | षष्ठ | उदेहि वाजिन् से स प्राची दिशमानु पर्यन्त<br>अष्टादश काण्ड 3 से 4 अनुवाक, 15 से 28 कंडिका | 137 | 9 | |
| 7 | सप्तम | स संवत्सरमूर्ध्वोतिष्ठत् से योऽस्थ प्रथमोपान<br>अष्टादश काण्ड 5 से 6 अनुवाक, 29 से 43 कंडिका | 140 | 9 | |
| 8 | अष्टम | अति सृष्टोऽपां से सप्तभि पराङ् पर्यन्त<br>अष्टादश काण्ड 6 से 9 अनुवाक, 44 से 56 कंडिका | 140 | 9 | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 9 | नवम | ओचित् सखायम् से यो ममार प्रथमो पर्यन्त<br>अष्टादश काण्ड 10 से 11 अनुवाक, 57 से 70 कंडिका | 137 | 9 | |
| 10 | दशम | अकर्म ते स्वपसो से यद् वो अग्नि पर्यन्त<br>अष्टादश काण्ड 12 से 13 अनुवाक, 71 से 82 कंडिका | 137 | 9 | |
| 11 | एकादश | ॐ देवपात्रं वै से तदाहुः कि देवत्य<br>गोपथब्राह्मण उत्तर भाग तृतीय प्रपाठक, 1 से 23 कंडिका<br>कयानश्चित्र से तदाहुः किं षोडशिनः पर्यन्त<br>गोपथब्राह्मण उत्तर भाग चतुर्थ प्रपाठक, 1 से 19 कंडिका | | 10 | |
| **नोट -** कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी। | | | 1189 मन्त्र | 100 अंक | |

# महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

## (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

## अथर्ववेद पैप्पलाद शाखा पाठ्यक्रम

| वेदविभूषण द्वितीयवर्ष (उत्तरमध्यमा द्वितीयवर्ष / कक्षा XII समकक्ष) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उनविंशति काण्ड, कंडिका 56, अनुवाक 14, मन्त्र संख्या 905<br>विंशति काण्ड, कंडिका 65, अनुवाक 10, मन्त्र संख्या 629 | | | | | |
| **क्रमांक** | **माह / पक्ष** | **पाठ्यक्रम बिन्दु** | **मन्त्र संख्या** | **अंक** | **अध्ययन-अध्यापन** |
| 1 | प्रथम | दोषो गाय से शमीमश्वत्थ आरुढ पर्यन्त<br>ऊनविंश काण्ड 1 से 3 अनुवाक,<br>1 से 12 कंडिका | 153 | 9 | प्रथम मास द्वितीया से प्रारम्भ होकर सप्तमी पर्यन्त गुरु छात्र को पढायेंगे।<br>गुरु दो बार मन्त्रार्ध को उच्चारण करेंगे छात्र चार बार पढेंगे।<br>नवमी से छात्रों को गुरु त्रयोदशी पर्यन्त स्वयं बैठकर सन्था करायेंगे।<br>तृतीय सप्ताह में छात्र कण्ठस्थ करेंगे और चतुर्थ सप्ताह में गुरु को कण्ठस्थ सुनायेंगे।<br>चतुर्थ सप्ताह से पूर्वपाठ की आवृत्ति चलेगी तत् पश्चात् नूतन पाठ पढाया जाएगा।<br>ब्राह्मण भाग का कुछ विशेष, एक-दो कंडिका कण्ठस्थ करेंगे, सम्पूर्ण नहीं। |
| 2 | द्वितीय | अभित्वेन्द्र से न तं यक्ष्मा पर्यन्त<br>ऊनविंश काण्ड 4 से 6 अनुवाक,<br>13 से 24 कंडिका | 153 | 9 | |
| 3 | तृतीय | यूपेरन्ते विद्वेषणं से दीर्घजिह्वा पर्यन्त<br>ऊनविंश काण्ड 7 से 9 अनुवाक,<br>25 से 36 कंडिका | 153 | 9 | |
| 4 | चतुर्थ | अभित्वा शत से आवद् बहुलं पर्यन्त<br>ऊनविंश काण्ड 10 से 13 अनुवाक,<br>37 से 48 कंडिका | 153 | 9 | |
| 5 | पञ्चम | इन्द्रं वयं वणिजं से विराडसि<br>ऊनविंश काण्ड 14 अनुवाक,<br>49 से 56 कंडिका | 157 | 9 | |
| 6 | षष्ठ | धीति वा ये से उपह्वये सुदुघां पर्यन्त<br>विंशति काण्ड 1 से 2 अनुवाक,<br>1 से 12 कंडिका | 153 | 9 | |
| 7 | सप्तम | स्वाहाकृतः से दूराद् भेषजमा पर्यन्त<br>विंशति काण्ड 3 से 4 अनुवाक,<br>13 से 25 कंडिका | 153 | 9 | |
| 8 | अष्टम | सं मा भगेन से यद्यस्य प्रियया पर्यन्त<br>विंशति काण्ड 5 से 6 अनुवाक,<br>26 से 38 कंडिका | 15 | 9 | |
| 9 | नवम | अपेहि तक्मंचर से उत्तभ्नामिक्षीरं गवांक्षीर पर्यन्त<br>विंशति काण्ड 7 से 8 अनुवाक,<br>39 से 51 कंडिका | 153 | 9 | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 10 | दशम | रात्रीं रात्रीमप्रयातं से अयं पिण्डः विंशति काण्ड 8 अनुवाक, 52 से 65 कंडिका | 153 | 9 | |
| 11 | एकादश | अहर्वै देवा आश्रयन्त से यः श्वः स्तोत्रियमद्य स्त्रोत्रिस्यानुरूपं पर्यन्त गोपथब्राह्मण पंचम प्रपाठक, 1 से 15 कंडिका | | 5 | |
| 12 | द्वादश | तान्वा एतान् से अथ दाध्रिकी शसति पर्यन्त गोपथब्राह्मण उत्तर भाग षष्ठ प्रपाठक, 1 से 16 कंडिका | | 5 | |
| **नोट -** कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी। | | | 1534 मन्त्र | 100 अंक | |